#९३. कार्य-व्यवहार क्रम

१९-०७-२०१३

व्यवहार संतुष्टि के लिये कार्य करना चाहता है मानव | इस क्रम में इच्छा की तृप्ति के लिये व्यवहार | इच्छाएं, विकसित चेतना, अविकसित चेतना के रूप में होता है | अविकसित चेतना को समझा गया है | मानव जात सर्वदेश काल में जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया | जागृत चेतना में जीना शेष रह गया है | मानव व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में जीवों से अच्छा जिया | मानव के अर्थ में जीना शेष है | इसी अर्थ में विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प के अनुसार मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का संयुक्त रूप ही विकसित मानव चेतना है | संयुक्त रूप में जीना, प्रमाणित होना शेष है | दिव्य चेतना अनुभवमूलक विधि से, देव चेतना सर्वतोमुखी समाधानपूर्वक विचारमूलक विधि से, और मानवीयतापूर्ण कार्य व्यवहार मानव चेतना रूप में गण्य है | यही विकसित चेतना का तात्पर्य है | यह जीवन सहज चिंतन, बोध, अनुभव में जागृति का ही द्योतक है | इन तीनों प्रकार के चेतना से जीने के लिये अधिकार सम्पन्न इकाई मानव ही है | इसे भली प्रकार से परीक्षण किया है | इन तीनों प्रकार से सम्पन्न प्रमाण ही तीन प्रमाण होता है -१-समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में देखा गया है; जी के देखा गया है | २- नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूप में होता है | इसे जी के देखा है | ३-मानव चेतना के रूप में जीना होता है | जीने से स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में होता है | इसे परीक्षण कर देखा गया है | उक्त तीनों प्रकार से जीने पर किसी में असहमति नहीं है |

इसे ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों से पूछा गया है, सहमति व्यक्त करते हैं | अभी प्रमाणित होना शेष है | साथ में लोकव्यापीकरण होना शेष है | लोकव्यापीकरण होने से अखण्डता, सार्वभौमता प्रमाणित होता है | शिक्षा विधि से प्रमाणित होना देखा गया है | उसका प्रयत्न चालू है | इस क्रम में मानव का स्वस्थ स्वरूप समझ में आता है | फलस्वरूप इसका परम्परा होना स्वाभाविक है | इसी विधि से मानव अखण्डता, सार्वभौमता को प्रमाणित करता है | सार्वभौमता, अखण्डता को प्रमाणित करने का अधिकार केवल मानव में ही है | समुदायों के रूप में सभी जीव जी चुके हैं | अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूप में जीना शेष है | इसका अधिकार मानव में ही है | कुत्ता, बिल्ली, गाय, बाघ आदिकाल से अभी तक एक ही प्रकार से हैं | इनके आचरण में कोई अंतर नहीं हुआ | मानव का आचरण में अंतर हुआ | जंगल युग में अलग, पत्थर युग में अलग, बारूद युग में अलग, मिसाइल युग में अलग | ये अलग-अलग जीना ही परिवर्तन माना गया है | श्रेष्ठ माना गया है | श्रेष्ठता का परिचय में जीवों से अच्छा जीना ही हाथ लगा | जबकि जीव चेतना में जिया | जीवों से अच्छा जिया | इस क्रम में मानव को सकारात्मक भाग जीवों से अच्छा जीना हाथ लगा है | साथ में धरती बीमार हो गया |

मानव का आचरण से ही धरती बर्बाद हुआ है | विज्ञान संसार आने के बाद फिशन नाम का प्रक्रिया शुरू किया | इसमें से कोई देश ज्यादा, कोई देश कम प्रयोग किया | हजारों बार फिशन का प्रयोग हुआ | धरती में हुआ, जल में हुआ, आकाश में हुआ | इन तीनों प्रकार से होने से फिशन कार्यक्रम में जो कुछ भी गर्मी पैदा हुआ है, वह धरती में समाया है | धरती बेकार हो गया | नियति विधि से ऋतु काल की जो व्यवस्था थी, उसमें परिवर्तन हो गया | अभी भी वर्षा होता है, गर्मी होता है, ठंडी होता है | नियति विधि से जहाँ जितनी गर्मी होती थी, वर्षा होती थी, ठंडी होती थी उसमें परिवर्तन हो गया | जहाँ ये तीनों होता था वहाँ मनुष्य उत्साह से कार्य करता था | इन दोनों में परिवर्तन हो गया | मानव अपने श्रमशीलता से वंचित हो गया

और धरती में गर्मी बढता गया | अब थोड़ा सा बढ़ना और शेष है | मानव मरने के लिये तैयार बैठे हैं | इसका अध्ययन से ये पता चला कि मानव ही समझने वाला है | ये सब समझ में आने से परिवर्तन हो सकता है | इसलिये प्रस्ताव रूप में विकल्प को रखा है | इन दोनों बातों के लिये विकल्प है- जिसको आदर्शवाद कहते हैं, जिसको भौतिकवाद कहते हैं | इन दोनों का विकल्प रूप में प्रस्ताव लिखा है | प्रस्ताव विधि से समझ में आने से मनुष्य ईमानदार होना बनता है | ईमानदारी, समझदारी के अनुरूप सोच विचार करना ही है | समझदारी के सम्बंध में सोच विचार ही कार्य प्रणाली का आधार बनता है | कार्य व्यवहार प्रमाण प्रणाली ही प्रमाण के रूप में पहले न्याय के रूप में प्रस्तुत होता है | इस अध्ययन से यह भी पता लगता है कि अभी तक न्याय सुलभ नहीं हुआ है | धरती पर सभी समुदायों में ज्ञानी, विज्ञानी हो गये, अज्ञानी रह गये |

इसीलिये विकल्प को तीनों के लिये अध्ययन करने के अर्थ में रखा है | यह शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होना माना है | इसके लिये जिम्मेदारी हर व्यक्ति, हर समुदाय में होना है | हर समुदाय में ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी होते हैं | इसलिये इन तीनों का अध्ययन के लिये योग्य विधि से विकल्प को प्रस्तुत किया है | विकल्प विधि से ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व अनुभवमूलक विधि से होता है | अनुभव सह-अस्तित्व में होता है | नम्बर दो में नियम, नियंत्रण,संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है जिसमें से नियम, नियंत्रण, संतुलन मनुष्येतर संसार में | मनुष्येतर संसार में मानव के अलावा सभी व्यवस्थित हैं | उनके आचरण में कोई परिवर्तन नहीं है | मानव के आचरण में परिवर्तन होता रहा और परिवर्तन होने की आवश्यकता है | विकसित, जागृत चेतना विधि से जीना शेष है | इसी के लिये विकल्प प्रस्तुत हुआ है | विकल्प विधि से ही इसको पहचाना जा सकता है | इसी आशय में विकल्प को हिंदी भाषा में मूल में लिखा है | अभी भी कुछ लोग इंग्लिश भाषा में लिखने का प्रयत्न कर रहे हैं | साथ में में प्रांतीय भाषा में भी लिखने का प्रयत्न चल रहा है | इस विधि से अर्थात स्वयंस्फूर्त विधि से लोकव्यापीकरण होना स्वाभाविक है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)